शोध-सार

दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो वर्तमान समय में सबसे ज्यादा प्रासांगिक और लोकप्रिय है। दलित साहित्य दलित लेखकों द्वारा स्थापित किया गया है। यदि हिंदी साहित्य की बात की जाए तो हिंदी साहित्य के इतिहास में दलित लेखकों को आजादी से पहले और आजादी के बाद भी वह स्थान नहीं दिया गया जिसके वे हकदार थे। परंतु दलित साहित्य की चेतना इससे पहले सिद्ध, नाथ, कबीर, रैदास और अन्य संत कवियों के रूप में देखी जा सकती है। प्रश्न उठता है कि क्या दलित साहित्य लेखन उस समय नहीं हो रहा था या दलित लेखक जागरूक नहीं थे अथवा अशिक्षित थे ? जिस प्रकार हिंदी साहित्य के इतिहास में कई महानायकों ने हिंदी साहित्य को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका योगदान दिया है ठीक वैसे ही दलित साहित्य में भी कई महानायकों ने दलित साहित्य को लाने में अपना योगदान दिया है। जिनमें ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव अंबेडकर, रामास्वामी पेरियर, स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर', चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु आदि प्रमुख हैं। इन महानायकों की रचनाओं और आंदोलनों ने लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया। इनकी विचारधारा से प्रभावित होकर नवयुवकों का रुझान दलित साहित्य की ओर बढ़ा और वर्तमान समय में दलित साहित्य की ओर साहित्यकारों द्वारा दलित साहित्य पर लेखन किया जा रहा है। जिस कारण यह साहित्य लोकप्रिय होता जा रहा है। दलित साहित्य लेखन का मूल उद्देश्य दलित वर्ग के लोगों में चेतना जगाना है। दलित साहित्य का विकास उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध, पत्र-पत्रिका, कहानी, आलोचना आदि के माध्यम से हो चुका है और आगे भी अग्रसर है। दलित साहित्य में दलित वर्ग के लोगों की वेदनाएं और उत्पीड़न देखने को मिलता है। दलित साहित्य भी हिंदी साहित्य की ही तरह स्थापित हो चुका है। इस साहित्य पर वर्तमान समय में अत्यधिक शोध किए जा रहे हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के पहले अध्याय में हिंदी दलित साहित्य के 'दलित' शब्द का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, उद्भव व विकास के साथ-साथ वर्तमान स्थितियों पर चर्चा की गई है। हिंदी दलित साहित्य में 'दलित' शब्द का अर्थ माना जाता है जिसका दलन, दबाया, दमन, शोषण, उत्पीड़न किया गया हो, उसे दलित कहा जाता है। दलित साहित्य ऐसा साहित्य है जिसे सहानुभूति (किसी और के द्वारा लिखा गया) और स्वानुभूति

(स्वयं की अनुभूति और पीड़ा को शब्दों का रूप देना) का साहित्य कहा जाता है। दलित साहित्य का स्वरूप पौराणिक कथाओं, वेदों और स्मृतियों में मिथक के रूप में दिखाई देता है लेकिन उसका प्रमाणित रूप देखने को नहीं मिलता है। दलित साहित्य लेखन का विकास असल में हीरा डोम की कविता से माना जाता है इसके पश्चात् स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' को इसी क्रम में देखा जाता है। दलित साहित्य को इस मुकाम तक ले जाने का श्रेय ज्योतिबा फुले, रामास्वामी पेरियर, डॉ. भीमराव अंबेडकर, अछूतानंदजी 'हरिहर' और चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु आदि प्रमुख विद्वानों को जाता हैं। उस समय इनकी रचनाओं और आंदोलनों के द्वारा दलित वर्ग के लोगों में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ और नवयुवकों का रुझान दलित साहित्य लेखन की ओर बढ़ा। दलित साहित्य के बारे में लोगों को सन् 1960 से पता चलता है। तब से अब तक दलित साहित्य उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, निबंध, पत्र-पत्रिका, आलोचना आदि में देखने को मिलता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के दूसरे अध्याय में स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' और चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु के व्यक्तित्व, कृतित्व और साहित्यिक योगदान पर चर्चा की गई है। दोनों कवियों ने अपनी रचनाओं और आंदोलनों द्वारा दलित वर्ग में नई चेतना जागाने का प्रयास किया। यही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की सबसे बड़ी विशेषता तथा यही उनका साहित्यिक योगदान भी है।

तीसरे अध्याय में दोनों लेखकों द्वारा अपनी रचनाओं और आंदोलनों के माध्यम से वर्ण व्यवस्था, जातिवाद, ब्राह्मणवाद आदि कुरीतियों पर चर्चा की गई है। इस अध्याय में दोनों लेखकों ने अपने-अपने नजरिए से वर्ण, जाति, ब्राह्मणवाद आदि को देखा है। प्राचीन काल से दलित वर्ग पर हो रहे शोषण व अन्याय को दोनों ने दलित वर्ग बताया है। पहले वर्णों की उत्पति हुई उसके बाद वर्णसंकर जातियाँ बनी फिर इन वर्णों से बनी हजारों जातियाँ और इन जातियों से बनी हजारों उप-जातियाँ। इस प्रकार समाज में वर्ण व्यवस्था, जातिवाद और ब्राह्मणवाद ने घर कर लिया। पहले दलित वर्ग के लोगों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, परंतु जैसे-जैसे समाज बदला और नए नियम-कानून बने समाज में दलित वर्ग के लोगों को शिक्षा का अधिकार तथा अन्य अधिकार संविधान के अंतर्गत प्राप्त हुए। इसके बावजूद भी समाज में दलित वर्ग पर शोषण और उन पर अन्याय समाप्त नहीं हुआ। समाज बदला लोग बदले और साथ ही शोषण के तरीके भी बदल गए।

चौथे अध्याय में दोनों लेखकों द्वारा प्रयोग में लाई गई भाषा-शैली पर प्रकाश डाला गया है। दोनों लेखकों की रचनाओं में आक्रोशात्मक, विरोधात्मक और भावनात्मक आदि भाव देखने को मिलते हैं। साथ ही उनकी भाषा-शैली प्रतीकात्मक और बिंबात्मक भी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सरल और साधारण शब्दों का प्रयोग किया है। अतःप्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में उपरोक्त बातों पर प्रकाश डाला गया है तथा दोनों लेखकों के रचना संचयन का तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक, वर्णनात्मक तथा समीक्षात्मक रूप से अध्ययन किया गया है।